[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

D

Sr. No. of Question Paper : 3370

Unique Paper Code : 2055091003

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE) – C

Name of the Course : **B.Com. (Programme)**

Semester : I

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किंही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

(12×12=24)

(i) हिन्दी के स्वरूप पर विचार कीजिए।

(ii) अवधी बोली की विशेषताएँ लिखिए।

P.T.O.

(iii) हिन्दी साहित्येतिहास के आदिकाल की सामान्य विशेषताएँ बताइए।

(iv) भारतेन्दुयुगीन साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. कबीरदास **अथवा** सूरदास का साहित्यिक परिचय लिखिए। (12)

3. "बिहारी गागर में सागर भरने वाले कवि हैं"। इस कथन की पुष्टि कीजिए। (12)

अथवा

घनानंद के काव्य सौन्दर्य पर विचार कीजिए।

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का प्रतिपादय लिखिए। (12)

अथवा

"रोटी और संसद" कविता का मूल्यांकन कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियों बताय।।
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

अथवा

मैया! मैं नहिं माखन खायो
जानि परे ये सखा सबै मिलि मेरों मुख लपटायो।
देखि तुही छीकें पर भाजन ऊँचे धरि लटकायों।
हों जु कहत नान्हें कर अपने मैं कैसे करिपायो।
मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो।
डारि सांटि मुसुकाई जशोदा स्यामहि कंठ लगायो।
बाल बिनोद मोद मन मोहयो भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास जसुमति को यह सुख सिव बिरंचि नहिं पायो।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ
जा तन की झाई परे, स्यामु हरित दुति होई।।
कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय
या खाए बौराए जग, वा पाए बौराय।।

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु समान्य बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलें तजि आपुनपौ, झझकैं कंपटी जे निसांक नहीं।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौ पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

P.T.O.

(ग) चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

अथवा

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
में पूछता हूँ -
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।